27 / 12 / 83 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सदा के अधिकारी बनने का अनुभव

➢➢ मैं स्वदर्शन चक्रधारी आत्मा

➳ _ ➳ विश्व परिक्रमा करते हुए देख रही हूँ

→ भीख मांगती हुई आत्माएं

◆ कोई धन के भिखारी

◆ कोई सहयोग के भिखारी

◆ कोई सम्बन्ध के भिखारी

◆ कोई सुख-चैन के भिखारी

◆ कोई आराम वा नींद के भिखारी

◆ कोई मुक्ति के भिखारी

◆ कोई दर्शन के भिखारी

◆ कोई मृत्यु के भिखारी

• बस दे दो, दे दो की पुकार

➳ _ ➳ मैं आत्मा चेकिंग करती हूँ

→ क्या मेरे अन्दर

◆ मांगने के संस्कार तो नहीं

• पाना है पाना है के

• गीत तो नहीं गाती

➳ _ ➳ उड़ चलती हूँ दाता के पास

➳ _ ➳ बाबा के रंग-बिरंगी किरणों के नीचे बैठकर

→ अनेक प्रकार के

→ भिखारी की स्थिति की ड्रेस को

◆ संस्कार रूपी पेटी सहित

• भस्म कर रही हूँ

➳ _ ➳ स्वप्न और संकल्पों में भी

→ भिखारीपन के संस्कारों से

◆ सदा के लिए मुक्त हो रही हूँ

➳ _ ➳ स्वदर्शन चक्र फिराकर

→ अनेक चक्करों से छूट रही हूँ

◆ तन के चक्र

◆ मन के चक्र

◆ धन के चक्र

◆ सम्बन्ध-सम्पर्क के चक्र

➳ _ ➳ मैं दाता की बच्ची

→ मास्टर दाता हूँ

◆ मांगने के संस्कारों से मुक्त

• अधिकारी आत्मा बन गई हूँ

➳ _ ➳ 'मैं बाबा की और बाबा मेरा'

→ बस इस एक संकल्प से

→ सदा प्रसन्नचित्त रहती हूँ

◆ अब कोई प्रश्न नहीं

• सारे काम स्वतः हो रहे हैं

• सारे अनुभव स्वतः हो रहे हैं

• सारे विघ्न स्वतः मिट रहे हैं

➢➢ मैं स्वराज्य अधिकारी आत्मा हूँ

➳ _ ➳ मेरे हर संकल्प और बोल में

→ एक ही शब्द समाया है

◆ 'मेरा बाबा'

• जिससे मैं सर्व अविनाशी खजानों की

• अधिकारी बन गई हूँ

➳ _ ➳ ऐसे अविनाशी स्वराज्य की मालिक हूँ

→ जिसके सर्व खजानों के भंडार

◆ सदा भरपूर रहते हैं

• कोई अप्राप्ति नहीं

• कोई कमी नहीं

➳ _ ➳ बाबा की याद में रहने से

→ सारे फरियाद ख़तम हो गए हैं

◆ संकल्पों से भी पदमगुणा ज्यादा

• बिना मांगे स्वतः ही

• बाबा से प्राप्त कर रही हूँ

➳ _ ➳ सदा अधिकारी आत्मा बन

→ सर्व को भिखारी से

◆ अधिकारी बना रही हूँ

→ सब कुछ पा लिया

◆ सदा यही गीत गा रही हूँ